प्राक्कथन

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध अकबरकालीन राजस्थान की सामाजिक और आर्थिक दशा पर पूर्ण हुआ है। भारतीय इतिहास में विशेष रूप से मुगलों के शासनकाल में प्रान्तों का निर्माण हुआ, जिसमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान राजस्थान का रहा है। राजस्थान का महत्व कई दृष्टियों से रहा है – सामरिक, राजनैतिक, भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक आदि की दृष्टि से यहाँ ही नहीं विश्व इतिहास में भी अपना महत्त्व रखता है। राजस्थान का इतिहास भारतीय इतिहासकारों ने विदेशियों से राष्ट्रीवादी इतिहासकारों, वामपंथी इतिहासकारों तथा गैरसामन्ती इतिहासकारों ने राजस्थान के इतिहासकार चारण और नटों ने भी किया है। अध्ययन की वर्तमान दशा के अन्तर्गत अध्ययन–सामग्री इस प्रकार मिलती है। यथा – जे. टॉडकृत **एनल्स एण्ड एन्टीक्वीटीज ऑफ राजस्थान**, जिल्द 3, आक्सफोर्ड, 1920; गौरीशंकर हीरानन्द ओझाकृत **उदयपुर राज्य का इतिहास,** भाग 1–2, 1925–26; **राजपूताना का इतिहास,** अजमेर, 1927; **बीकानेर राज्य का इतिहास**, अजमेर, 1930–40; **जोधपुर राज्य का इतिहास**, 1941; ए.सी. बनर्जीकृत **राजपूत स्टडीज**, कलकत्ता, 1944; **मध्य कालीन भारतीय संस्कृति,** इलाहाबाद, 1970; हुकम सिंह भाटीकृत **राजस्थान के मेड़तिया राठौड़,** जोधपुर, 1986; ईद मोहम्मदकत **राजस्थान का सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास,** जयपुर, 1989; वी.एस. भार्गवकृत **मारवाड़ से मुगलों के सम्बन्ध,** जयपुर, 1995;गोपीनाथ शर्माकृत **राजस्थान के इतिहास के स्रोत,** जयपर, 1995; राघवेन्द्र मनोहरकृत **राजस्थान के प्रमुख दुर्ग,** जयपुर 1997; लईक अहमदकृत **मुगल कालीन भारत,** इलाहाबाद, 2005; गोपीनाथ शर्माकृत **राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास,** जयपुर, 2007; सतीश चन्दकृत **मुगलों की धार्मिक नीतियाँ : राजपूत–समुदाय और दक्खिन,** नई दिल्ली, 2008। कर्नलटाड ने अपनी पुस्तक राजस्थान का इतिहास में लिखा है कि भारत का दो–तिहाई भाग राजस्थान कहलाता है। राजपूतों की 38 जातियों का वर्णन किया है। लेकिन सामाजिक एवं

आर्थिक इतिहास के सम्बन्ध में विशेष विवरण नहीं दिया है। गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने राजपूताने का इतिहास आठ भागों में लिखा है, जिसमें राजनैतिक इतिहास का पूरा विवरण हमें मिलता है, परन्तु सामाजिक–आर्थिक पहलू को उन्होंने ने नजरअंदाज कर दिया है। वर्तमान अध्ययन में अकबर–कालीन राजस्थान की सामाजिक एवं आर्थिक दशा का अध्ययन, अनुशीलन एवं परिशीलन प्रस्तुत किया गया है।

अध्ययन की समस्या

अध्ययन की समस्या का शीर्षक **"अकबर–कालीन राजस्थान की सामाजिक एवं आर्थिक दशा (1556–1605 ई.)**" है।

अध्ययन का उद्देश्य

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. राजस्थान की ऐतिहासिक एवं भौगोलिक पृष्ठभूमि ज्ञात करना।
2. अकबर–कालीन राजस्थान के समाज, हिन्दू–मुस्लिम समाज का अध्ययन, अनुशीलन, परिशीलन करना।
3. अकबर–कालीन राजस्थान के रहन–सहन, खान–पान, वेशभूषा, पर्व, त्योहार, व्रत का अध्ययन, अनुशीलन, परिशीलन करना।
4. मुगल–राजपूत सम्बन्ध (वैवाहिक सम्बन्धों का महत्व) का अध्ययन, अनुशीलन, परिशीलन करना ।
5. अकबर–कालीन राजस्थान की शिक्षा तथा नारियों की दशा का अध्ययन, अनुशीलन, परिशीलन करना ।
6. अकबर–कालीन राजस्थान के भू–राजस्व व्यवस्था का अध्ययन, अनुशीलन, परिशीलन करना ।
7. अकबर–कालीन राजस्थान के उद्योग–धन्धों का अध्ययन, अनुशीलन, परिशीलन करना।
8. अकबर–कालीन राजस्थान के व्यापार एवं वाणिज्य का अध्ययन, अनुशीलन, परिशीलन करना।

शोध–विधि

वर्तमान अध्ययन ऐतिहासिक शोध–विधि पर आधारित है।

शोध की सीमा

अकबर–कालीन राजस्थान की सामाजिक एवं आर्थिक दशा के अध्ययन क्रम में शोध की सीमा राजस्थान की ऐतिहासिक स्थिति पर आधारित है जिसका 1556–1605 ई. तक समय सीमा निर्धारित की गयी है।

अध्याय–क्रम

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध को निम्नलिखित अध्यायों में बाँटकर पूर्ण किया गया है – **पहले अध्याय** में 'राजस्थान की ऐतिहासिक एवं भौगोलिक पृष्ठभूमि', दूसरे **अध्याय** में 'समाज, हिन्दू–मुस्लिम समाज', **तीसरे अध्याय** में 'रहन–सहन, खान–पान, वेशभूषा, पर्व, त्योहार, व्रत', **चौथे अध्याय** में 'मुगल–राजपूत सम्बन्ध (वैवाहिक सम्बन्धों का महत्व)', **पाँचवें अध्याय** में 'शिक्षा तथा नारियों की दशा', **छठवें अध्याय** में 'भू–राजस्व व्यवस्था', **सातवें अध्याय** में 'उद्योग–धन्धा', **आठवें अध्याय** में 'व्यापार एवं वाणिज्य' का अध्ययन, अनुशीलन, परिशीलन प्रस्तुत कर **उपसंहार एंव सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची प्रस्तुत की गयी है।**

गीता यादव